मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी: उर्दू-हिंदी अदब में ख़्वातीन की हिस्सेदारी

नई दिल्ली, 13 मई, 2025

सरोजिनी महिला अध्ययन केंद्र (एसएनसीडब्लूएस), जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा दिल्ली उर्दू अकादमी के सहयोग से विगत सप्ताह "उर्दू-हिंदी अदब में ख़्वातीन की हिस्सेदारी" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

5 मई को उद्घाटन सत्र के साथ संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी की संयोजक डॉ. फ़िरदौस अजमत सिद्दीक़ी ने स्वागत भाषण दिया जिसमें उन्होंने उर्दू और हिंदी साहित्यिक परंपराओं में महिलाओं के योगदान को मान्यता देने की आवश्यकता पर बल दिया। एसएनसीडब्लूएस की मानद निदेशक प्रो. निशात ज़ैदी ने भाषा, जेंडर और साहित्य के जटिल संबंधों पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया। प्रमुख वक्ता के रूप में प्रसिद्ध उपन्यासकार रहमान अब्बास ने कहा, "औरतें अब केवल किरदार नहीं रहीं, वे विचार और प्रतिरोध की प्रतीक बन चुकी हैं।" दिल्ली उर्दू अकादमी के सचिव श्री मोहम्मद अहसन आबिद ने साहित्यिक अध्ययन को बढ़ावा देने में सहयोगी अकादमिक पहलों के महत्व को रेखांकित किया। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ उद्घाटन सत्र का समापन हुआ, जिससे पूरे कार्यक्रम का ऊर्जावान माहौल निर्मित हुआ।

इस संगोष्ठी में उद्घाटन और समापन सत्र के अतिरिक्त नौ विशिष्ट सत्र आयोजित हुए, जिनमें महिलाओं की उर्दू-हिंदी कविता, गद्य, पत्रकारिता, सिनेमा और सामाजिक विमर्श की भूमिका पर चर्चा की गई। 5 मई को जिन विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए उनमें प्रमुख थे: प्रो. अहमद महफूज़, प्रो. सविता सिंह, नाटककार श्री असलम परवेज़ (मुंबई), उर्दू पत्रिका संपादक श्री शदाब राशिद (मुंबई), डॉ. हैदर अली, कवि व कहानीकार श्री खुर्शीद अक़राम, सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ. रिज़वान-उल-हक़ (एनसीईआरटी), डॉ. अनब नय्यर। समकालीन कथा साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण पर हुई, चर्चा ने विशेष ध्यान आकर्षित किया और विचारोत्तेजक बहस का मंच बना।

6 मई को संगोष्ठी की शुरुआत प्रो. अज़रा आबिदी के विशेष संबोधन से हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रो. निशात ज़ैदी ने की। प्रो. आबिदी ने प्रो. सुघरा मेहदी की साहित्यिक विरासत पर चर्चा की। इसके बाद डॉ. सनाबर हुसैनी द्वारा क़ुर्रतुल ऐन हैदर के प्रसिद्ध उपन्यास 'आग का दरिया' पर प्रस्तुत पत्र में समाज, राजनीति और राष्ट्रीय पहचान की स्त्री-दृष्टिकोण से विवेचना की गई।

"महिलाएं और मीडिया" तथा "महिलाएं और सिनेमा" विषयों पर सत्रों में सदफ़ खान, सुश्री सुल्तनत (डीडी उर्दू), वरिष्ठ पत्रकार सुश्री रत्ना शुक्ला और कलाकार शाह अबुल फ़ैज़ (ललित कला संकाय) ने विचार प्रस्तुत किए। शाह अबुल फ़ैज़ ने हिंदी सिनेमा के स्वर्णकाल पर रोचक वक्तव्य देते हुए मीना कुमारी और मधुबाला की विरासत को रेखांकित किया।

दलित साहित्य में नारीवादी विमर्श पर प्रो. हेमलता महेश्वर और प्रो. क़हकशां ने वंचित वर्ग की महिलाओं की आवाज़ को मुखर किया। "साहित्य में महिलाएं" सत्र में डॉ. सुरैय्या तबस्सुम, डॉ. मोहम्मद अफ़ज़ल, डॉ. हिना खान और डॉ. नौशाद ने स्त्री अस्मिता, प्रतिरोध और एजेंसी जैसे विषयों पर चर्चा की।

संगोष्ठी का समापन काव्य पाठ सत्र से हुआ, जिसकी अध्यक्षता प्रो. रहमान मुसाविर ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. संजीव कौशल (दिल्ली विश्वविद्यालय) उपस्थित रहे। प्रसिद्ध कवियों में प्रो. सविता

सिंह, रेनू हुसैन, तरुणा मिश्रा, डॉ. वाला जमाल अल-असीली (मिस्र), शारिक़ा मलिक, प्रो. दिलीप शाक्य और डॉ. अपर्णा दीक्षित ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

समापन सत्र की मुख्य अतिथि डॉ. रश्मि सिंह (आई ए एस, प्रमुख निवासी आयुक्त, आतिथ्य एवं प्रोटोकॉल, जम्मू और कश्मीर) रहीं, जिन्होंने अपने सारगर्भित समापन संबोधन में अधिक समतामूलक समाज के निर्माण हेतु स्त्री दृष्टिकोण को समाहित करने की वकालत की। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो. आसिफ मज़हर ने अध्यक्षीय व्याख्यान में महिलाओं की गरिमा और उनके योगदान को पहचानने का आह्वान करते हुए स्त्री-पुरुष समानता को सामाजिक प्रगति की नींव बताया। सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो. मुस्लिम ख़ान ने संगोष्ठी को एक सार्थक संवाद और शैक्षणिक विमर्श को आगे बढ़ाने वाली पहल बताया।

प्रो. निशात ज़ैदी ने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, "इस संगोष्ठी ने उर्दू-हिंदी साहित्य में महिलाओं की अटूट रचनात्मकता और जिजीविषा को सामने लाया है, जिससे हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत और समावेशी समाज के निर्माण में उनका योगदान और अधिक स्पष्ट हुआ है।"

डॉ. फ़िरदौस अजमत सिद्दीक़ी ने प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी उत्साही भागीदारी ने विमर्श को ऊंचाई प्रदान की और एसएनसीडब्लूएस के जेंडर और साहित्य पर गहन चर्चा को बढ़ावा देने के उद्देश्य को साकार किया। उन्होंने यह भी कहा कि यह संगोष्ठी उर्दू-हिंदी साहित्य, मीडिया, सिनेमा और सामाजिक विमर्श में महिलाओं की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित करने वाला एक प्रभावशाली मंच सिद्ध हुआ है।

इस विशेष अवसर पर एक सम्मानसूचक भेंट के रूप में, डॉ. फ़िरदौस अजमत सिद्दीक़ी का हाल ही में प्रकाशित अपने उपन्यास 'रिंद' को मुख्य अतिथि डॉ. रश्मि सिंह तथा कुलपति प्रो. आसिफ मज़हर को भेंट किया गया, जो इस संगोष्ठी में महिलाओं की साहित्यिक उपलब्धियों के उत्सव का प्रतीक था।

यह राष्ट्रीय संगोष्ठी महिलाओं की आवाज़ों की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करने वाली रही, जिसने साहित्य, मीडिया और सामाजिक विमर्श में उनके बदलते स्वरूपों पर गहन विद्वत्तापूर्ण विमर्श को मंच प्रदान किया। यह आयोजन उर्दू-हिंदी साहित्य की साझा विरासत और समावेशी समाज के निर्माण में उसकी प्रासंगिकता को सुदृढ़ करता है।

यह आयोजन सफल रहा और इसमें कवियों, आलोचकों, पत्रकारों, उर्दू और हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वानों के साथ-साथ जामिया मिल्लिया इस्लामिया के विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।

प्रो साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी
जामिया मिल्लिया इस्लामिया